Dr Parikshit kr. Singh
Dept of LSW
SNSRKS College, Saharsa

श्रम अर्थशास्त्र

श्रम-अर्थशास्त्र: अर्थ एवं क्षेत्र

(Meaning & scope of Labour Economics)

मानव जीवन की सभी आर्थिक सामाजिक एवं अन्य गैर-आर्थिक क्रियाओं में श्रम का अतिप्राचीन काल अपने-आप में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हमारे मानव-जीवन का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सभ्यता एवं संस्कृति के विकास, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति और यहाँ तक कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास के पीछे भी श्रम की किसी-न-किसी रूप में महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय भूमिका रही है। उत्पादन के साधन के रूप में श्रम का एक विशेष महत्व है, क्योंकि उत्पादन के अन्य साधनों का उपयोग श्रमिकों की कार्य कुशलता, शक्ति एवं समय के उचित उपयोग पर बहुत हद तक अवलंबित है।

सामान्य अर्थ में मानव या अन्य प्राणियों के किसी प्रकार की शारीरिक या मानसिक क्रियाओं को श्रम के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। किन्तु श्रम अर्थशास्त्र में श्रम शब्द का उपयोग विशेष अर्थ में किया जाता है जिसमें केवल उन्हीं मानवीय क्रियाओं का बोध होता है जिनसे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण सम्बन्धी आर्थिक क्रियाएं सम्पन्न होती हैं।

अर्थशास्त्र की प्रमुख शाखा के रूप में 'श्रम-अर्थशास्त्र आर्थिक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत श्रम के कार्यों के अध्ययन की विशिष्टीकृत अवस्था है। यह श्रम-बाजार की दशाओं को विस्तृत रूप से समझने का प्रयास है तथा उनका ऐसे ढंग से विश्लेषण है, जिस ढंग से सामान्य अर्थशास्त्र द्वारा श्रम-बाजार की

Scanned with CamScanner

दशाओं का विश्लेषण सम्भव नहीं है। यह अर्थ-व्यवस्था के विकास में श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका एवं स्थिति का प्रतिपादन है तथा श्रम-समस्या के आर्थिक पहलुओं का अध्ययन है। यद्यपि 'श्रम-अर्थशास्त्र' का आविर्भाव सामान्य अर्थशास्त्र की विशिष्ट शाखा के रूप में हुआ है, किन्तु इसे सामान्य अर्थशास्त्र से पृथक नहीं माना जा सकता, क्योंकि श्रम बाजार का सिद्धान्त 'सामान्य बाजार सिद्धान्त' का ही एक पहलू है। श्रम-बाजार भी उन्हीं नियमों द्वारा संचालित होता है, जिन नियमों द्वारा पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था में वस्तु की कीमत और मात्रा शासित होती है। श्रम-अर्थशास्त्र में श्रम सिद्धान्तों और श्रम-समस्याओं का ही विवेचन नहीं किया जाता, अपितु श्रम-समस्याओं के उपचार द्वारा आर्थिक विकास के उपाय भी बतलाए जाते हैं।

श्रम अर्थशास्त्र की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से की है, जिसका विश्लेषण हम इस प्रकार कर सकते हैं —

1. कार्टर तथा मार्शल (Allan M. Carter & M.R. Marshall): ने श्रम अर्थशास्त्र को "किसी औद्योगीकरण की ओर बढ़ती हुई अथवा औद्योगीकृत अर्थ व्यवस्था में श्रम बाजार के संगठन, संस्थाओं और आचरण के लिए अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है।"

2. लीवर डी रॉबर्ट (L. D. Robert): "श्रम अर्थशास्त्र में श्रम समस्याओं के वर्गीकरण एवं विश्लेषण तथा श्रमसंघों के विकास एवं भूमिका के साथ श्रम-बाजार की विशेषताओं का विवेचन किया जाता है।"

Scanned with CamScanner

3. डेल योडर (Dale Yoder) के शब्दों में, "श्रम-अर्थशास्त्र या जनशक्ति अर्थशास्त्र प्राथमिक रूप से जनशक्ति और संसाधनों के कुशलतम प्रयोग एवं सुरक्षा से सम्बन्धित है। यह उन प्रक्रियाओं का अध्ययन है, जिनके द्वारा आधुनिक समाज में जनशक्ति का प्रयोग किया जाता है।"

4. प्रोफेसर सी. एन. वकील (C.N. Vakil) "श्रम अर्थशास्त्र के अन्तर्गत एक बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में मानवीय कल्याण पर समुचित ध्यान देते हुए दूसरे साधनों के सम्बन्ध में मानवीय साधनों के प्रभावपूर्ण उपयोग की दशाओं का अध्ययन किया जाता है।"

एक तरह से यह दृष्टिकोण श्रम अर्थशास्त्र को एक विकास-प्रधान विषय के रूप में देखता है।

5. के. सी. जी. सेठ (K.C.G. Seth) के शब्दों में "श्रम अर्थशास्त्र सामाजिक उत्पादन-प्रणाली में अपेक्षाकृत स्वल्प मानवीय संसाधन के उपयोग का अध्ययन है।"

6. श्रम शब्दकोश (Labour Dictionary) के अनुसार, "श्रम अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसकी विशिष्ट विषय-वस्तु श्रम के आर्थिक क्रिया कलाप है। यह आर्थिक प्रक्रियाओं में श्रम के कार्यों एवं उन दशाओं का अध्ययन करता है जिनमें वे कार्य संपादित किए जाते हैं।"

हम श्रम अर्थशास्त्र की एक सामान्य परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं: "श्रम अर्थशास्त्र वह विज्ञान तथा कला है जिसमें विभिन्न श्रम समस्याओं का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक रूपों में अध्ययन किया जाता है।"

श्रम अर्थशास्त्र एक विज्ञान है क्यों कि श्रम की किसी समस्या पर तब तक विचार नहीं किया जाता जब तक कोई

ध्यान न हो कि श्रम का व्यवहार कैसे होता है, क्यों होता है? व्यवहार में कुछ नियम होते हैं। अतः व्यवहार का सैद्धान्तिक विवेचन भी हो सकता है। श्रम की कुछ समस्याएं भी होती हैं जिनके कारण और परिणामों पर विचार करके उनका निदान खोजने की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार श्रम अर्थशास्त्र के अध्ययन का सैद्धान्तिक पक्ष भी है और व्यवहारिक उपयोग भी। इसलिए हम कह सकते हैं कि श्रम अर्थशास्त्र एक विज्ञान और कला दोनों ही है।

श्रम अर्थशास्त्र का क्षेत्र
(Scope of Labour Economics)

यद्यपि श्रम अर्थशास्त्र का अध्ययन 'सामान्य' अर्थशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा के रूप में किया जाता है फिर भी इसे सामान्य अर्थशास्त्र से पृथक नहीं माना जा सकता, क्योंकि श्रम बाजार सिद्धांत (Labour Market Theory) सामान्य बाजार सिद्धांत (General-Market Theory) का ही एक पहलू है और उसका निर्देशन भी उन्हीं नियमों के द्वारा होता है जिनके द्वारा कीमत तथा वस्तु की मात्रा का सामान्य प्रकार से होता है।

श्रम अर्थशास्त्र के अन्तर्गत 'आर्थिक व्यक्ति' के बजाय 'सम्पूर्ण व्यक्ति' के रूप में श्रमिक का अध्ययन किया जाता है। श्रम अर्थशास्त्र के विस्तृत क्षेत्र की व्याख्या करते हुए डा. वी. वी. सिंह ने लिखा है; "यह शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के मजदूरी पाने वाले श्रम (Wage Labour), उद्योग तथा अन्य व्यवसायों में सेवायुक्त (Employee) के रूप में उसकी काम करने की दशाओं (Working Conditions) कुल राष्ट्रीय उत्पादन में श्रमिकों के भाग तथा उसे निर्धारित करने वाले नियमों, श्रम की सम्भावित प्रवृत्तियों, रोजगार के अवसर बढ़ाने के साधनों, किसी उद्योग या व्यवसाय से सम्बन्धित अन्य पहलुओं से श्रमिकों का एक विशद अध्ययन है।"

मोटे तौर पर श्रम अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया जाता है।

1. श्रमिकों वर्ग एवं श्रम बाजार का आकार एवं उसकी रचना,
2. मानव शक्ति नियोजन तथा प्रशिक्षण,
3. श्रम संगठन, औद्योगिक सम्बन्ध एवं श्रम नीति,
4. मजदूरी और रोजगार सिद्धांत, सामूहिक सौदाकारी का सिद्धांत तथा सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याण के सिद्धांत का व्यवहार,
5. सेविवर्गीय प्रशासन एवं कार्य मूल्यांकन के सिद्धांत,
6. विवेकीकरण स्वचालन एवं कर्मचारी प्रबन्ध,
7. श्रम प्रशासन,
8. आर्थिक नियोजन एवं श्रम,
9. श्रमिकों की जोखिमें व समस्याएं।

श्रम अर्थशास्त्र के क्षेत्र को दृष्टिगत रखते हुए उसके निम्न लिखित दो पक्ष किए जा सकते हैं:

1. सैद्धान्तिक पक्ष
2. संस्थागत पक्ष

1. सैद्धान्तिक पक्ष (Theoretical Aspect): श्रम अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष विभिन्न मान्यताओं द्वारा आर्थिक व्यवहार के मापदंडों के बनाने से सम्बन्धित है और इस प्रकार इसे सामान्य आर्थिक सिद्धांतों का एक अंग माना जा सकता है। आधुनिक युग में श्रम अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों का अध्ययन धीरे-धीरे अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। आर्थिक अध्ययन के एक प्रमुख अंग के रूप में यह अर्थशास्त्र के अध्ययन की एक शाखा है जिसके अन्तर्गत श्रम एवं उसकी समस्याओं तथा उससे सम्बन्धित सिद्धांतों आदि का अध्ययन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

वस्तुतः श्रम समस्याओं का अध्ययन दूसरे आर्थिक तत्वों के सन्दर्भ में ही करना होता है, क्योंकि विभिन्न आर्थिक तत्व एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं। उदाहरणार्थ, रोजगार की मात्रा पर मजदूरी की सामान्य कटौती के प्रभाव को मालूम करने के लिए आय निर्धारण की पद्धति देखना जरूरी है।

2. **संस्थागत पक्ष (Institutional Aspect):** श्रम अर्थशास्त्र का संस्थागत पक्ष प्रमुख रूप से किसी संस्थागत ऐतिहासिक सन्दर्भ में श्रम समस्याओं के विश्लेषण से सम्बन्धित होता है। वस्तुतः आर्थिक प्रणाली के संस्थागत ढांचे के बदलने के साथ-साथ श्रम समस्याओं का स्वरूप भी बदल जाता है। मजदूरी निर्धारण पद्धति या श्रमिक संघों की कार्य प्रणाली की संस्थागत बातें (Institutional Factors) अलग करके पूरी तरह नहीं समझा जा सका। आवश्यक रूप से श्रम अर्थशास्त्री किसी दूसरे अर्थशास्त्री की तरह ही खास-तौर पर आर्थिक समस्याओं और आर्थिक गतिविधियों में ~~विशेष~~ दिलचस्पी लेता रहा है।

विगत वर्षों में श्रम अर्थशास्त्री, श्रम बाजार में आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आदि तत्वों पर भी काफी ध्यान देने लगे हैं। और श्रम बाजार में सेवा योजकों एवं श्रमिकों के मध्य संबंधों में संस्थागत बातों के उदय, उत्पादन तकनीकों में परिवर्तन, औद्योगिक संबंधों में विशिष्ट विचार धाराओं का आविर्भाव, श्रम अर्थशास्त्र में कुछ महत्वपूर्ण मामलों के सम्बन्ध में सिद्धान्तवादियों (Theorists) और व्यवहारवादियों (Institutionalists) के बीच मतभेद तथा श्रम अर्थशास्त्र के अध्ययन में प्रत्यक्ष अथवा अनुभव

पर आधारित रीति (Empirical Method) के प्रयोग आदि ने श्रम अर्थशास्त्र के) क्षेत्र में व्यापक रूप से वृद्धि की है।

संक्षेप में, श्रम अर्थशास्त्र में श्रम सिद्धान्तों व व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। श्रम अर्थशास्त्र एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित हो गया है। इसके अपने सिद्धांत, नियम, उपनियम व व्यवस्थित ज्ञान-भंडार हैं। एडम्स व समर (Adams and Summar) के शब्दों में: "श्रम समस्या का क्षेत्र इतना विशाल है कि श्रम संघवाद एवं औद्योगिक शांति की समस्याएँ उसके अंतर्गत आ जाती हैं। श्रम समस्या के अन्तर्गत श्रमिकों की भर्ती से लेकर उत्पादकता वृद्धि तक की सम्पूर्ण समस्याएँ सम्मिलित की जाती हैं।"

विगत वर्षों में श्रमबाजार एवं नियोजकों और श्रमिकों के बीच संबंधों में संस्थागत तथ्यों के उदय, उत्पादन तकनीक में परिवर्तन, औद्योगिक संबंधों में विशेष विचार-धाराओं का उदय, श्रम अर्थशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण मामलों के सम्बन्ध में सिद्धांतवादियों एवं व्यवहारवादियों के बीच विवाद एवं मतभेद एवं श्रम अर्थशास्त्र के अध्ययन में प्रत्यक्ष या अनुभव पर आधारित विधि के उपयोग आदि ने श्रम अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अधिक वृद्धि ला दी है।

Scanned with CamScanner